समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 5

आप भले तो जग भला

श्रीमन्नारायण

भाग – 2

कीर्ति बसुमतारी

जब सरदार पृथ्वीसिंह ने हिंसा का मार्ग त्यागकर अपने को बापू के सामने अर्पण कर दिया तब बापू को बहुत खुशी और संतोष हुआ।

पर बापू जहाँ प्रेम और सहानुभूति की मूर्ति थे, वहाँ बड़े परीक्षक भी थे। कुछ दिनों बाद उन्होंने पृथ्वीसिंह से कहा, "सरदार साहब, अगर आप सेवाग्राम में आकर मेरे आश्रय में रह सकें तभी मैं समझूँगा कि आपने अहिंसा का पाठ सचमुच सीख लिया है"।

संतोष – শান্তি परीक्षक – পৰীক্ষক

सेवाग्राम – ৱর্ধাত গান্ধীজীৰ আশ্রম

" पृथ्वीसिंह जरा चौंककर बोले, "आपका क्या मतलब बापूजी ?“

"भाई, मेरा आश्रम तो एक प्रयोगशाला जैसा ही है। जिन लोगों की कहीं नहीं बनती, अक्सर वे मेरे पास आ जाते हैं। उन सबको एक-साथ रखने में मैं सीमेंट का काम करता हूँ और वह सीमेंट मेरी अहिंसा ही है।“

प्रयोगशाला – লেবৰেটৰী

"मैं समझ गया, बापूजी !"- पृथ्वीसिंह ने मुस्कराकर कहा। आगे की कहानी यहाँ करने की जरूरत नहीं, पर इसमें बापू के प्रेममय व्यवहार की एक झलक मिल जाती है। उन्होंने अपने प्रेम और सहानुभूति से कितने ही व्यक्तियों को अपनी ओर खींचा था। बापू कड़ी-से-कड़ी आलोचना कर सकते थे और करते भी है, पर हँसकर मीठी चुटकियाँ लेना, अपना प्रेम दरसाकर।"

मीठी चुटकियाँ – হাঁহি ধেমালীৰে ঠাট্টা কৰা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अमेरिका के मशहूर लेखक इमर्सन की एक घटना याद आती है। उन्हें गाएँ पालने का शौक था। इसलिए गाएँ और नन्हे बछड़े मकान के पास एक कुटी में रहते थे। एक बार जोर की बारिश आने वाली थी। सभी गाएँ तो झोंपड़ी के अंदर चली गईं, पर एक बछड़ा बाहर ही रह गया। इमर्सन और उनका लड़का दोनों मिलकर उस बछड़े को पकड़कर खींचने लगे कि वह कुटी में चला आए पर ज्यों-ज्यों उन्होंने जोर से खींचना शुरू किया त्यों-त्यों वह बछड़ा भी सारी ताकत लगाकर पीछे हटने लगा।

बछड़े - গৰু পোৱালী

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

बेचारे इमर्सन बड़े परेशान हुए। इतने में उनकी बूढ़ी नौकरानी उधर से निकली। जैसे ही उसने यह तमाशा देखा, वह दौड़ी आई और अपना अँगूठा बछड़े के मुँह में प्यार से डालकर उसे झोंपड़ी की तरफ ले जाने लगी। बछड़ा चुपचाप कुटी के अंदर चला गया।

वह अनपढ़ नौकरानी किताबें और कविताएँ लिखना नहीं जानती थी, पर व्यवहार-कुशल अवश्य थी और जब जानवर भी प्रेम की भाषा समझते हैं तो फिर मनुष्य होकर क्यों नहीं समझेंगे ?

कुटी – জুপুৰী ঘৰ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कल हमारे मित्र का रसोइया बिना खबर दिए ही चला गया। बेचारा करता भी क्या! सुबह से शाम तक उसके महाशय की डाँट खानी पड़ती थी। "तूने आज दाल बिलकुल बिगाड़ दी। उसमें नमक बहुत डाल दिया।" अरे बेवकूफ तूने साग में नमक ही नहीं डाला।" "यह जली रोटी कौन खाएगा रे!" आदि की झड़ी लगी रहती थी।

जब कोई चीज जरा भी बिगड़ जाती तब तो उसे दिल खोलकर डाँटा जाता। पर अच्छा भोजन बनने पर कभी तारीफ के दो शब्द न बोले जाते। "वाह ! तारीफ कर देने से उसका दिमाग चढ़ जाएगा ।"

रसोइया – ৰান্ধনি

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मेरे मित्र कह देते। ठीक है! है तो वह भी आदमी ही। उसके भी दिल है। बेचारा कुछ रुपए का नौकर यंत्र नहीं बन सकता। तंग आकर भाग जाने के सिवा और क्या चारा था ?

कहने का मतलब यह कि उनकी किसी से नहीं बनती न मित्रों से, न ऑफिस के कर्मचारियों से और न घर के नौकरों से।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

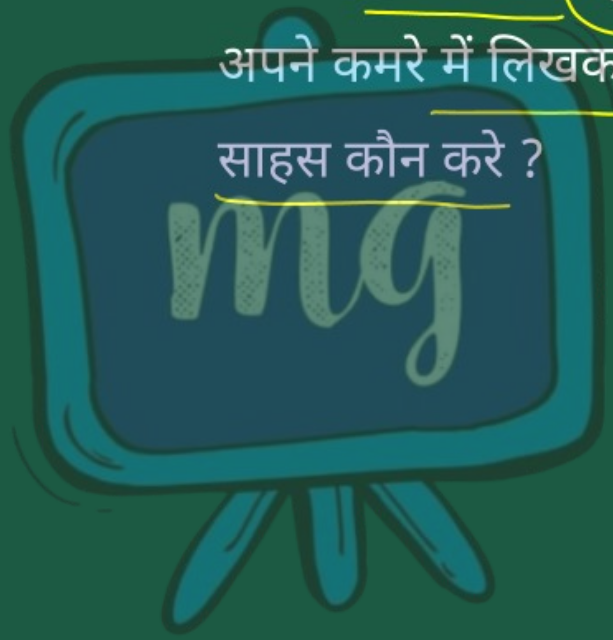
Under CSR Support by
ipca | Foundation

उस पर भी मजा यह है कि वे अपनी जिंदगी और विचारों से पूरी तरह संतुष्ट हैं। वे मानते हैं कि उनका जीवन, आचार और विचार आदर्श हैं। दूसरे लोग जो उनका सम्मान नहीं करते, मूर्ख हैं। ग्रीस के महान संत सुकरात (Socrates) ने एक बात बड़े पते की कही थी, "जो मनुष्य मूर्ख है और जानता है कि वह मूर्ख है, वह ज्ञानी है, पर जो मूर्ख है और नहीं जानता कि वह मूर्ख है, वह सबसे बड़ा मूर्ख है।"

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अच्छा हो, सुकरात के इस विचार को मेरे मित्र अपने कमरे में लिखकर टाँग लें। पर उनसे यह कहने का साहस कौन करे ?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

प्रस्तुत पाठ अत्यंत भाव-गंभीर तथा हृदय स्पर्शी है। इस पाठ में जीवन जीने की एक दृष्टि दी गई है। लेखक ने विभिन्न दृष्टांतों, प्रसंगों और उद्धरणों द्वारा यह बताने का प्रयत्न किया है कि यदि मनुष्य स्वयं भला है तो उसे सारा संसार भला दिखाई देता है। भला होने से आशय है- सदैव दूसरों की अच्छाइयों को देखना, अपने अवगुणों पर भी ध्यान देना और हर परिस्थिति में खुश रहना। अपने निंदक का भी एहसानमंद होना और प्रत्येक व्यक्ति के साथ प्रेम और नम्रतापूर्ण व्यवहार करना।

मूल्यांकन



1 बापू के अनुसार सिमेंट किसका प्रतीक है ?

क हिंसा

ख दोष

ग अहिंसा

मूल्यांकन



2 सुकरात (Socrates) के अनुसार कौन सबसे बड़ा मूर्ख है?

क जो अपने विचारों से संतुष्ट है।

ख जो नही जानता की वह मूर्ख है।

ग जो लोगों का सम्मान न करें।

मूल्यांकन



3 रसोइया बिना खबर दिए क्यों चला गया ?

क वह खाना नहीं बना पाता था।

ख वह अपने महाशय की बात नही मानता था।

ग उसके महाशय उसे डाँटते रहते थे।